दोहों के जाम नेताओं के नाम

मा. अमरीक सिंह



Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library has been created with the approval and personal blessings of Sri Satguru Uday Singh Ji. You can easily access the wealth of teaching, learning and research materials on Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library online, which until now have only been available to a handful of scholars and researchers.

This new Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library allows school children, students, researchers and armchair scholars anywhere in the world at any time to study and learn from the original documents.

As well as opening access to our historical pieces of world heritage, digitisation ensures the long-term protection and conservation of these fragile treasures. This is a significant milestone in the development of the Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library, but it is just a first step on a long road.

Please join with us in this remarkable transformation of the Library. You can share your books, magazines, pamphlets, photos, music, videos etc. This will ensure they are preserved for generations to come. Each item will be fully acknowledged.

To continue this work, we need your help

Your generous contribution and help will ensure that an ever-growing number of the Library's collections are conserved and digitised, and are made available to students, scholars, and readers the world over. The Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library collection is growing day by day and some rare and priceless books/magazines/manuscripts and other items have already been digitised.

We would like to thank all the contributors who have kindly provided items from their collections. This is appreciated by us now and many readers in the future.

Contact Details

For further information - please contact

Email: NamdhariElibrary@gmail.com

kirpal singh chana

दोहों के जाम
नेताओं के नाम

लेखक :–
मा. अमरीक सिंह

प्रकाशक :–
नामधारी पंजाबी साहित्य सभा
श्री जीवननगर (सिरसा)

Dohan Ke Jam
Netaon Ke Nam

By :-
Master Amrik Singh
Amritsar Kalan
Sirsa-125102 (Hry.)

प्रकाशक :–
नामधारी पंजाबी साहित्य सभा
श्री जीवननगर (हरियाणा)

मुल्य : 40 रुपये

मेरे पुज्य पिता स्वर्गीय सरदार करतार सिंह जी
के चरणों में समर्पित जिन्होनें मुझे ये कुछ
लिखने की अंतर–प्रेरणा प्रदान की।

लेखक :–

मा. अमरीक सिंह

पिता : स्वर्गीय सरदार करतार सिंह

जन्म स्थान : गांव लालेपुर जिला गुजरांवाला (पाकिस्तान)

जन्म तिथि : 1-1-1930

निवास : अमृतसर कलां सिरसा-125102 (हरियाणा)

पहली बार सन् 2000

इसी कलम से :–

1.	पंखड़ीयां		(पंजाबी)
2.	ग़म दी महक	(गजल संग्रह)	(पंजाबी)
3.	दर्द दा अहसास	(गजलें)	(पंजाबी)
4.	मिठ्ठीयां मिर्चां	(व्यंग्य)	(पंजाबी)
5.	सच्ची तेरी सिफ़त	(गीत)	(पंजाबी)

विवेचन

जारी है परम्परा दोहे की

डॉ० राजकुमार निजात

दोहा राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश, पंजाब व हरियाणा के लोक संगीत में रचा बसा, काव्यधारा का एक प्रमुख छन्द है। सीमित मात्राओं में दो पंक्तियों में अपनी अभिव्यक्ति की रचना एक गुरूतर सृजन कार्य है। संभवतः इसी कारण काव्य की धड़कन होते हुए भी यह गूंज से परे है। यह एक पूर्ण स्वतंत्र काव्य–विधा है। मात्रिक छन्दों में निरूपित होने के कारण यह एक लयात्मक काव्यधारा है। हमारे साहित्य और संस्कृति में दोहा कहने की एक लम्बी परम्परा रही है। यदि इतिहास के सामान्य आवरण में ही झांक लें तो पृथ्वीराज चौहान के समय का चारण कवि चन्दरबरदाई ने दोहा छन्द में अपने अधिकांश महाकाव्यों की रचना की। 'पृथ्वीराज रासो' काव्य का आधार दोहा ही है। दोहे का आदि रूप इससे पूर्व नहीं मिलता।

जहां ग़जल की भाषाएं बदलीं और इसमें भाषाई व शैलीगत प्रयोग हुए वहां दोहा में ऐसा अधिक नहीं हुआ। यूं तो यह हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, गुजराती के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रीय भाषाओं व बोलियों में भी लिखा गया मगर कबीर व अमीर खुसरो के खड़ी बोली के दोहे जबान पर अधिक चढ़े व लोकप्रिय भी हुए। कबीर के दोहों ने तो जनमानस को सर्वाधिक प्रभावित किया है। खड़ी बोली से दोहा ब्रजभाषा, भोजपुरी, बुन्देलखण्डी में उतरा और लोकप्रिय हुआ। मगर हिन्दी भाषा में आने पर यह साहित्यिक दायरे में अधिक सीमित हो गया। दोहे को परिभाषित किया जाए तो कहना होगा कि कसी हुई भाषा, शब्दों की मितव्यता न हो कथ्य संक्षिप्त हो और वर्णन अलंकारिक हो। अतः छोटे छन्द कलेवर वाला दोहा बड़ा अर्थसम्पन्न एवम् मारक होता है। हृदय में यह भाव पैदा करता है तो मस्तिष्क में विवेक। लय और रसयुक्त काव्यात्मकता के कारण यह हृदय और मस्तिष्क में सीधा स्थान बना लेता है।

आज का युग भौतिकवादी युग है। इस मशीनी और संस्कृति विहीन युग में समय का अभाव सभी को है। अतः ऐसे दौड़भाग में न किसी को कहने की फुरसत है न सुनने की। ऐसे समय में दोहा अपना विधागत प्रभाव प्रेषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। आज का युग यूं तो गीत व गज़ल का युग है मगर दोहे का अपना काव्य रस है जिसकी पूर्ति काव्य का कोई दूसरा अंग पूरा नहीं कर सकता।

मास्टर अमरीक सिंह मूल रूप से पंजाबी भाषी साहित्यकार है। प्रमुख रूप से ये कवि हैं। इनके प्रस्तुत दोहे वर्तमान समय की विसंगतियों का एक खुला लेखा जोखा हैं। इनकी भाषा में पंजाबी, हिन्दी व उर्दू का सम्यक मिश्रण है। ये दोहे राजनीति के दीवालियेपन पर व्यंग्यात्मक प्रहार हैं। मगर अर्थ व सम्प्रेषण की दृष्टि से ये रचनाएं सफल हैं। यथा–

राजनीति को समझते नेता वह व्यापार।
हींग लगे न फटकड़ी, आए खूब निखार।।

(पृष्ठ–2)

लोगो, जो मैं जानती नेता हैं नापाक।
कभी न इनको सौंपती अपनी इज्ज़त नाक।।

(पृष्ठ–3)

मास्टर अमरीक सिंह ने एक ही विषय को लेकर इस दोहावली की रचना की है। इसमें इन्होंने राजनीति व कथित नेता का भिन्न–भिन्न कोणों से विश्लेषण किया है। हमारे सामान्य जीवन में राजनीति में यह गिरावट जहां हमें एक ओर सोचने के लिए बाध्य करती है वहां हमें इसके भयंकर परिणामों के लिए चेतावनी भी देती है। मास्टर जी की सोच व चिन्ता जायज़ है। यह सोच हमें राजनीति के भ्रष्ट, धोखेबाज, कपटी, विवेकहीन व देशद्रोही राजनेताओं पर अविलम्ब लगाम लगाने के लिए प्रेरित ही नहीं करती बल्कि बाध्य भी करती है। इस दोहे में यह बाध्यता उजागर होती है–

मेहनत करता मर गया रात दिवस मजदूर।
रोटी दोनों वक्त की मिले न उसे हजूर।।

(पृष्ठ–19)

किसानों के राजनीतिक शोषण व व्यवस्था के कुपोषण के प्रति यह दोहा मर्मस्पर्शी है–

फ़सल बेचने के लिए मण्डी आया किसान।
खाली हाथों आ गया हुआ न कुल भुगतान ।।

(पृष्ठ–20)

एवम्

उत्पादक, उपभोक्ता दोनों झेलें दुःख।
एजेंटों के भाग्य में लिखे हैं सारे सुख।।

(पृष्ठ–20)

विधानसभाओं और संसद में नेताओं का गाली गलौच अब मारधाड़ में बदलने लगा है। यदि वहां बन्दूक, तलवार, भाले ले जाने की अनुमति होती तो संभवतः वहां का दृश्य कल्पना से भी परे होता। फिर भी संसद, विधानसभाओं में इनका अप्रत्याशित, उग्र व्यवहार इनकी योग्यता पर प्रश्नचिन्ह खड़ा कर देता है।

संसद–भवन में पहुंचकर करते खूब खरूद।
कुर्सी, माइक, चप्पलें, चलती बिन बारूद।।

(पृष्ठ–22)

नेताओं का व्यवहार दोगला और चेहरे पर मुखौटा इनके चरित्र का साफ रूप प्रकट करता है। वोट प्राप्त करने के लिए कैसा भी वायदा करने वाला सभ्य समाज का यह मानवीय प्राणी चुनाव जीतने के बाद गिरगिट की तरह रंग बदल लेता है–

जीत गए तो मिल गई झण्डी वाली कार।
बाद में ये पहचानते, नहीं किसी को यार।।

(पृष्ठ–10)

इन पर कब तक भरोसा करें। देश और कौम को राह दिखाने वाले खुद राहजन बन गए हैं–

कैसा ये प्रबन्ध है, कैसा है यह राज ।
बाड़ खेत को खा रही, सँवरे कैसे काज।।

(पृष्ठ–14)

नेताओं के घर में धन दौलत के अम्बार कल्पना से भी परे की बात है। यह सब इनकी भ्रष्ट सत्ता और लूटमारी का परिणाम है कि ये रातों–रात करोड़पति और अरबपति बन जाते हैं–

नेताओं के घरों में दौलत ऐसे आए।
वर्षा ऋतु में जिस तरह नदी उफनती जाए।।

(पृष्ठ–14)

क्योंकि झूठ इनका ईमान है। धोखाधड़ी इनका व्यवहार और सत्ता इनका व्यापार है–

झूठ के चलते दौर में, सच्ची बात न बोल।
खूब मिलेगी सफलता कभी न पूरा तौल।।

(पृष्ठ–15)

और

पैसा इनका धर्म है पैसा है ईमान।
इनके चंगुल में फंसा देश का हर इन्सान।।

(पृष्ठ–23)

जनता इनके कपटपूर्ण रवैये से दुःखी, हैरान, परेशान है। इसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा –

दो चेहरे नेताओं के, बोलें दोए जुबान।
मुंह में उंगली दबाकर जनता खड़ी हैरान।।

(पृष्ठ–30)

हैरान और स्तब्ध जनता का क्रन्दन करते हुए इन्हे बद्दुआ देता हुए कहता है–

घर को आग लगाए कर होइए मत प्रसन्न ।
जलोगे संग परिवार के सुनिए नेता गण।।

(पृष्ठ–38)

इन बेईमान नेताओं ने देश का बूरा हाल कर दिया है। सत्ता इनकी बपौती हो गई। भारत मां का हृदय इनके इस व्यवहार से दीर्ण विदीर्ण है। लेकिन

वह कुछ नहीं कर पा रही–

भारत माता आ गई, उन लोगों के हाथ।
जो हैं इसको काटते छुरियों से दिन रात।।

(पृष्ठ–41)

इस प्रकार कुछ अन्य वर्णनात्मक और प्रसंगात्मक दोहे भी है। प्रश्न यह नहीं है कि कौन से दोहे सारयुक्त हैं और कौन से सारहीन। प्रश्न कवि के प्रयास का है, उसकी भावना का है, चिन्तन का है। वह अपने देश के भीतर पनप रहे इस अप्रत्याशित वातावरण से न केवल दु:खी है बल्कि चिन्तित भी है। उसकी यह भावना इन दोनों का प्रतिरूपहै।

नेता लोग न कर रहे इस मसले पर गौर।
दिन–दिन देश है बढ़ रहा बरबादी की ओर।।

(पृष्ठ–42)

मास्टर अमरीक सिंह का हिन्दी में यह प्रथम प्रयास है। पंजाबी कवि का हिन्दी–प्रेम हो अथवा हिन्दी कवि का पंजाबी प्रेम इससे साहित्य तो समृद्ध होता ही है। मास्टर जी ने दोहों में यह कृति देकर इस क्षेत्र के साहित्य में स्वागतयोग्य, सराहनीय पहल की है। इसका विस्तृत मूल्यांकन होगा, भरपूर स्वागत होगा ऐसा मेरा विश्वास है।

समय व भाषाई परिवर्तन के साथ दोहे की यह परम्परा निरन्तर जारी है, जारी रहेगी व नई सदी को दस्तक देगी।

दिनांक : 13.9.99

पता : काठमण्डी
सिरसा–125055
(हरियाणा)

सन्देश

ऐलनाबाद में मेरे लगभग साढ़े सात महीनों के सेवाकाल के दौरान मा० अमरीक सिंह जी मेरे अच्छे मित्र रहे हैं। मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि इनकी 'दोहावली' शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है। मुझे पूर्ण आशा है कि इनकी रचना समय की कसौटी पर खरी उतरेगी और दोहावली के माध्यम से मास्टर जी जो संदेश समाज को देना चाहते हैं, उसमें वह अवश्य सफल होंगे।

शुभ कामनाओं सहित :–

जे.पी.एस. दहिया 'शादाब'

एच.सी.एस.



नेतागण जिस देश के,
सभी हों बेईमान।
उस बेचारे देश का,
वारिस अल्ला–जान।।

*

रात को जो घर लूटते,
उनको कहते चोर।
दिन के डाकू–जनों के,
हाथ में देश की डोर।।

*

कैसी है दीपावली,
कैसे हैं त्यौहार।
सारे देश में छा रहा,
भ्रष्टाचार अन्धकार।।

*

राजनीति को समझते,
नेता वो व्यापार।
हींग लगे न फिटकड़ी,
आए खूब निखार।।

*

बाड़ खेत को खा रही,
बचेगा कैसे खेत।
लाखों का सिर काटते,
एक पेट के हेत।।

*

नेता जनों के खून में,
रचा है कैंसर रोग।
इसका क्या उपचार है,
सोच रहे हैं लोग।।

*

लोगो जो मैं जानती,
नेता हैं नापाक।
कभी न इनको सौंपती,
अपनी इज्ज़त, "नाक"।।

*

किसको कर दें बरी हम,
किसको दें इल्ज़ाम।
सारे नंगे फिर रहे,
नेता बीच हमाम।।

*

नेता की जिस देश में,
नीयत खोटी होए।
कैसे वो बच पायेगा,
कैसे उन्नति होए।।

*

कैसी नेता–गीरी है,
समझ ना आए मोहे।
भ्रष्टाचार की दौड़ में,
पीछे रहा ना कोए।।

*

किश्ती, जिसके ना–ख़ुदा,
खुद फाड़ें पतवार।
नहीं किनारे लगेगी,
डूबेगी मंझधार।।

*

भक्त जनों की शकल है,
बगल में छुरी दबाए।
इनसे बचना धर्म है,
राह में जो मिल जाए।।

*

कैसी आज़ादी मिली,
दु:ख हो गये आज़ाद।
नेता ऐश उड़ा रहे,
जनता है बर्बाद।।

*

गली गली में फिर रहे,
कल जो बने फकीर।
सियासत के बलिहारने,
बने हैं आज वज़ीर।।

*

बाल बाल इस देश का,
आज हुआ मकरूज़।
लाकर नेतागणों के,
रहे है दिन–दिन सूज।।

*

वोटर पैदल चल रहे,
पड़ी पैरों पे धूल।
पर नेताओं को नहीं,
देसी कार कबूल।।

*

खद्दर पहने अर करें,
देश का सत्यानाश।
काले कौए जिस तरह,
नोच रहे हैं लाश।।

*

कैसी आज़ादी मिली,
कैसा है उत्थान।
हैट तो अपने घर गया,
अब टोपी प्रधान।।

*

हिन्दी रक्षा समिति,
के नेता प्रधान।
बच्चे इंग्लिश बोलते,
हिन्दी से अनजान।।

*

धोती कुर्ता बन गए,
चोरों की पहचान।
दिन में डाके डालते,
फिर भी रहें महान।।

*

मन्दिर–मस्जिद लड़ पड़े,
लेकर इनका नाम।
खड़े तमाशा देखते,
जलता सारा गाम।।

*

अमन कमेटी बन गई,
नेता प्रैजीडैंट।
नफरत हैं फैला रहे,
देश में परमानैन्ट।।

*

बनें विधायक फिर करें,
दल–बदली हर हाल।
गाजर मूली की तरह,
बने बिकाऊ माल।।

*

साठ साल की उम्र में,
हुए रिटायर साहब।
राजनीति में कूदते,
खूब कमाए लाभ।।

*

किस्से सियासत के सुनो,
राजा हैं जो आज।
कल को वो मुल्ज़िम बनें,
कौन बचावे लाज।।

*

धोखा–धड़ी के केस में,
फंस गए हैं पाँव।
न्याय नहीं है छोड़ता,
कैसे करें बचाव।।

*

हर इक सियासतदान ने,
राखे चेहरे दोए।
पूर्व एक चुनाव से,
दूजा बाद में होए।।

*

जहां कहीं गडबड़ हुई,
होगा इनका हाथ।
नारद–मुनि की ज़ात को,
दे देते हैं मात।।

*

ग़र्ज़ की खातिर राम को,
करें अल्ला से दूर।
भाई–भाई को करें,
लड़ने पर मजबूर।।

*

जीत गए तो मिल गई,
झण्डी वाली कार।
बाद में नहीं पहचानते,
नहीं किसी के यार।।

*

हार गए तो गली–गली,
खूब मचाते शोर।
"बंद" करवाकर तोड़ते,
प्रबन्ध की हर डोर।।

*

वोटर किसी भी काम से,
पहुँचें नेता द्वार।
कहें अभी फुर्सत नहीं,
चलो कोठी से बाहर।।

*

कहें कि इसी चुनाव में,
लगे है बीसों लाख।
पांच वर्ष में दस गुणा,
करें तो बनती साख।।

*

रिश्वत खोरी हो गई,
हर दफ्तर में आम।
उनके काम न बन सकें,
जो न देते दाम।

*

दिन–प्रतिदिन है बढ़ रहा,
भाई भतीजावाद।
आम लोग हैं हो रहे,
जहाँ तहाँ बर्बाद।।

*

कुर्सी खातिर बेचते,
नेता धर्म–ईमान।
सत्ता मिलते पलों में,
बन जाते हैवान।।

*

नाविक ही जिस नाव में,
खुद करते हैं छेद।
नहीं किनारे लगेगी,
है नहीं इसमें भेद।।

*

मित्र नहीं हैं किसी के,
सभी के बैरी जान।
ऊपर से हैं देवता,
भीतर से शैतान।।

*

भारत चन्दन वृक्ष है,
नाग हैं लिपटे साथ।
सभी भरे हैं ज़हर के,
कौन लगावे हाथ।।

*

कैसा ये प्रबन्ध है,
कैसा है यह राज।
बाड़ खेत को खा रही,
सँवरे कैसे काज।।

*

भेड़ समझ कर देश को,
खूब उतारें ऊन।
दिन–दिन नेता निखरते,
जनता भोगे जून।।

*

नेताओं के घरों में,
दौलत ऐसे आए।
वर्षा ऋतु में जिस तरह,
नदी उफनती जाए।।

*

झूठ के चलते दौर में,
सच्ची बात न बोल।
खूब मिलेगी सफलता,
कभी न पूरा तोल।।

*

लाखों दीं कुर्बानियाँ,
हुआ है देश आज़ाद।
भ्रष्ट लीडरों ने किया,
आज इसे बर्बाद।।

*

सोने की चिड़िया कहें,
भारत को सब लोग।
भ्रष्टाचार का लग गया,
इसको दीर्घ रोग।।

*

गली–गली नेता फिरें,
घपले मारें रोज़।
घोटालों की नदी में,
सबकी डूबी "नोज़"।।

*

झुग्गी में है सिसकता,
मिट्टी तेल का दीप।
जगमग बंगला, मंतरी,
का है खड़ा समीप।।

*

घोटालों की लूट में,
सभी रहे हैं लूट।
लोगों के हर दिशा में,
गए है छक्के–छूट।।

*

नेताओं के कोष में,
शब्द शर्म का नाहिं।
इनको गफले चाहिये,
जग डूबे जल माहिं।।

*

आओ मिलकर चलें हम,
परम–पिता के पास।
कहें कि बदलो खोपड़ी,
इनकी कर प्रयास।।

*

ढूंढे से भी न मिले,
(जो) बने हितैषी आज।
भारत मां की रख सके,
छिन्न हो रही लाज।।

*

क्यों लोगों को लूटते,
क्यों करते हो पाप।
सम्पत्ति संग जल मरोगे,
लगा जो इनका शाप।।

*

सड़क पे कल थे रेंगते,
आज है नीचे कार।
लोग देख हैरान हैं,
सियासत के चमत्कार।।

*

दीप जला खुद को,
दूर करे अंधियार।
नेता जी फैला रहे,
घर–घर भ्रष्टाचार।।

*

हाथ जोड घर–घर फिरें,
नेता माँगें वोट।
वोट ले बने जो मंत्री,
खूब कमायें नोट।।

*

मेहनत करता मर गया,
रात दिवस मज़दूर।
रोटी दोनो वक्त की,
मिले ना उसे हजूर।।

*

हाथ हिलाए बिना ही,
नेता हलवा खाए।
ऐश इन्हें तो चाहिये,
देश भाड़ में जाये।।

*

फ़सल बेचने के लिये,
मण्डी गया किसान।
खाली हाथों आ गया,
हुआ ना कुल भुगतान।।

✱

उत्पादक, उपभोक्ता,
दोनो झेलें दुःख।
ऐजन्टों के भाग्य में,
लिखे हैं सारे सुख।।

✱

गर्मी–सर्दी झेलकर,
फसल हो गई तैयार।
घर बैठे सौदा करें,
सेठ का सब परिवार।।

✱

नेताओं के जाल में,
फंस गये हैं लोग।
बहुत ही पक्के जाल से,
कौन निकालन जोग।।

*

पांच वर्ष के बाद ही,
आता मौका एक।
ढोंग चुनावों का रचें,
करें पाखण्ड अनेक।।

*

चुने गए श्रीमान् तो,
मिल गई कोठी–कार।
करके वायदा भूलना,
जन्मसिद्ध अधिकार।।

*

संसद भवन में पहुंचकर,
करते खूब खरुद।
कुर्सी, माइक, चप्पलें,
चलतीं बिन बारुद।।

*

अंग्रेज़ी में गालियाँ,
देते नेता लोग।
जाति झगड़ों के लिए,
बैठायें आयोग।।

*

सूखा या सैलाब हो,
इनकी बनती मौज।
सर्वे करे आकाश से,
मन्त्रियों की फ़ौज।।

*

पैसा इनका धर्म है,
पैसा ही ईमान।
इनके चंगुल में फंसा,
देश का हर इन्सान।।

✱

"रहबर" "रहज़न" बन गये,
किस पर हो विश्वास।
लोगों की आशाओं का,
हर दम करते नाश।।

✱

औरों को उपदेश दें,
लालच कीजे नाहिं।
मुँह और नाक डुबो रहे,
लालच कीचड़ माहिं।।

✱

वह भी तो नेता ही थे,
देश का किया उद्धार।
आज के नेता बन रहे,
देश के ऊपर भार।।

*

बंगला धन का ढेर है,
द्वार विदेशी कार।
फिर भी सबर न आ रहा,
कोटि–कोटि धिक्कार।।

*

देश की खातिर जिन्होंने,
दिया था सब कुछ त्याग।
शेर की मारी खा रहे,
आज के नेता काग।

*

सैंतालीस के बाद था,
जिसने जन्म लिया।
क्या जाने अंग्रेज़ को,
कैसे खत्म किया।।

*

सियासत कोरे झूठ का,
सुधरा हुआ है नाम।
नेता खूब कमा रहे,
दोनो नाम और दाम।।

*

काले धन अनगिनत की,
भरी तिजौरी देख।
खुशी में नेता मर गये,
उलटे लिखे थे लेख।।

*

जीवन के हर मोड़ पर,
इनकी लगी है छाप।
लोगों का शोषण करें,
उल्टा करके जाप।

*

करें जो तीर्थ यात्रा,
वो भी है व्यापार।
यात्रियों को ब्याज पर,
देते रकम उधार।।

*

लोग बेचारे ऊंट हैं,
इनके हाथ नुकेल।
दिन–दिन गहरे गढ्ढे में,
इनको रहे धकेल।।

*

चाहें अगर तबादला,
लायें तीस हजार।
साथ ही नेता जनों का,
होइये शुक्र गुज़ार।।

*

गांधी जी के नाम पर,
लूट पड़ी सब ओर।
कैसा राम का राज है,
लूट–पाट का दौर।।

*

अपनो को ही लूटते,
कर–कर लम्बे हांथ।
नेताओं व डाकुओं,
की है एक ही जात।।

*

बदनीयत नेता हुए,
नीति दूषित जान।
इनके हाथों दु:खी है,
देश का हर इन्सान।।

*

हेरा फेरी न करें,
वह नेता है कौन?
चूहे की बिल में लगे,
चले जो ताती पौन।।

*

कहने को हमदर्द हैं।
पर बेदर्द बड़े।
गुस्से में इनका रहे,
तेवर सदा चढ़े।।

*

इनको कुर्सी चाहिये,
भाड़ में जाये देश।
हर इक जगह ही इसी का,
देखो पड़ा क्लेश।।

*

पैसा ही सब कुछ नहीं,
क्यों बेचो ईमान।
साथ नहीं कुछ जायेगा,
जान बने अनजान।।

*

खा–खा माल हराम का,
पेट रहा है फूल।
बिन आई मर जाओगे,
जाएगा जन्म फ़जूल।।

*

कातिल और मकतूल को,
सबको दें सहयोग।
चिकनी चुपड़ी बात सुन,
मूर्ख बनते लोग।।

*

झोंपडियाँ मिस्मार कर,
ऊंचे भवन बनायें।
बच्चों सहित परिवार जन,
कहो किधर को जायें।।

*

दो चेहरे नेताओं के,
बोलें दोए ज़ुबान।
मुँह में ऊंगली दाब कर,
जनता खड़ी हैरान।।

*

बने वजीर तो मिल गई,
झण्डी वाली कार।
फूंकें तेल सरकार का,
अपना करें व्यापार।।

*

कुड़े के इक ढ़ेर से,
चुन–चुन भोजन खाय।
कार में काजू खा रहा,
तुमको शर्म न आय।।

*

बात–बात पर मुकरते,
नेता जन हैं आज।
राम राज है काहे का,
ये तो रावण राज।।

*

जिन्होंने दी कुर्बानियाँ,
उनको गए हैं भूल।
कल जो ग़ैर के "फैन" थे,
आज हुए मकबूल।।

*

बने वजीर तो मिल गई,
"बंगला" फ़ौरन क़ार।
टी.ए.डी.ए. मारते,
करते मौज बहार।।

*

दिन दुगुनी उन्नति करे,
देश में भ्रष्टाचार।
चारों ओर ही मची है,
देख लो हाहकार।।

*

सच कहने से यूँ डरें,
आज के नेता लोग।
डरें झूठ से वो जिन्हें,
लगा न सियासत रोग।।

*

आटे की रोटी बिना,
नहीं गुजारा होए।
महल उसारो स्वर्ण के,
सोना खाये न कोए।।

*

समझ सियासत को लिया,
है चौपट का खेल।
देश को चौपट कर दिया,
दियां जड़ों में तेल।।

*

ये आज़ादी मिली थी,
सीस दे मंहगे मोल।
नेता साहब नोट से,
रहे हैं इसको तोल।।

*

एक ने ओहदा पा लिया,
दूसरा खींचें टाँग।
फाइलों में है रूल रही,
अमन–चैन की माँग।।

*

चारों ओर है हो रही,
देश में बँदर बाँट।
लूट के इस बाज़ार में,
सबकी कटती गाँठ।।

*

धन के पीछे रात–दिन,
नेता कार दौड़ाए।
भरी हैं सभी तिजौरियाँ,
फिर भी सबर न आए।।

*

नैया डग–मग डोलती,
देश की बीच तूफान।
खेवण हारे लड़ रहे,
डूबन का सामान।।

*

नेताओं ने देश को,
किया बारूद का ढेर।
फटा तो सब जल मरेंगे,
लगेगी कुछ न देर।।

*

जिस बर्तन में खा रहे,
उसमें करते छेद।
इनकी करनी देख के,
होता सबको खेद।।

*

नेता उद–बिलाव बन,
बच्चे अपने खाएँ।
जीवन–दान जो दे इन्हें,
देते उन्हें सजाएँ।।

*

फांदी भींत चुनाव की,
घुसें है संसद बीच।
कुर्सी खातिर सब करें,
काम नीच से नीच।।

*

चोर–उचक्के चौधरी,
गुण्डे हैं प्रधान।
बाहर से दीखें देवता,
अन्दर से शैतान।।

*

कुर्सी ही बस लक्ष्य है,
कुर्सी ही ईमान।
कुर्सी चाहिये देश की,
हो कितना नुकसान।।

*

भारत का क्या बनेगा,
किसको है ये सोच।
कुर्सी लोभ ने सभी की,
अक्ल को लिया दबोच।।

*

सियासत शिखर दोपहर है,
ढ़लते लगे न देर।
कल थे जो रावण बने,
आज हुए है ढेर।।

*

संभलो ए नेता गणो,
टूट न जाए देश।
लंका ही जो न रही,
रहेगा कहाँ लंकेश।।

*

घर को आग लगाय के,
होइए मत प्रसन्न।
जलोगे संग परिवार के,
सुनिए नेता गण।।

*

जो कुछ नेता कह रहे,
यही है देश प्यार?
ऐसे देश प्यार को,
बार–बार धिक्कार।।

*

लोक राज दूषित किया,
नेताओं ने आज।
भ्रष्टाचारी कर दिया,
सारा सभ्य समाज।।

*

कुर्सी खाली देखकर,
सबका मन ललचाए।
एक बेचारी सभी का,
कैसे भार उठाए।।

*

नेता कुर्सी दौड़ में,
बहुत हुए बे–हाल।
देश की इज्ज़त आबरु,
कर दी पाए माल।।

*

खेल बिगाड़ा देश का,
खुश है नेता लोग।
इनके घर हल्वा पके,
जनता में है सोग।।

*

तू–तू मैं–मैं हो रही,
चारों और कमाल।
अफरा–तफरी मच गई,
कैसे करें संभाल।।

*

भारत माता आ गई,
उन लोगों के हाथ।
जो हैं इसको काटते,
छुरियों से दिन–रात।।

✱

वह भी तो नेता ही थे,
हुए थे जो कुर्बान।
देश की खातिर मर–मिटे,
बूढ़े, बाल, जवान।।

✱

नारे अति लुभावने,
नेता करें तलाश।
फिर दिल्ली जो ले चलें,
लोक सभा के पास।।

✱

ये भी तो नेता ही हैं,
पेट को करें प्यार।
देश का सब–कुछ लूटकर,
भर लेते घर–बार।।

*

आज आकाश है रो रहा,
करती धरा पुकार।
कैसे बचें नेताओं की,
निस दिन पड़े जो बीमार।।

*

नेता लोग न कर रहे,
इस मसले पर ग़ौर।
दिन–दिन देश है बढ़ रहा,
बर्बादी की ओर।।

*

थोप दिया है देश पर,
नेताओं ने चुनाव।
नेता गीरी की भूख का,
है सब यह प्रभाव।।

*

कितने ही कर लीजिये,
आप इलैक्शन रोज़।
नीयत तब तक साफ नहीं,
सब होगा "एक्सपोज़"।।

*

भोंचक्के से रह गये,
मतदाता हैं आज।
"डेढ साल" के बाद ही,
क्यों बिगड़ा सब काम।।

*

झगड़े संसद में हुए,
मिला न मत विश्वास।
धक्के खाते आ गए,
फिर जनता के पास।।

*

मतदाता जिस देश के,
मूर्ख बनें हमेश।
जिसको वोट हैं डालते,
करता वही क्लेश।।

*

दीमक देश को लग गई,
नेताओं की नीत।
हटे देश का डर नहीं,
बस गफलों से प्रीत।।

*

नेता झोली फैलाए के,
घर–घर माँगें वोट।
मुँह से कहते और हैं,
मगर है मन में खोट।।

*

घर घर मीटिंग हो रही,
कोई चलाओ चाल।
गद्दी जिसमें फंस जाये,
ऐसा फैंको जाल।।

*

बातों में आकाश के,
तारे रोज चुनो।
धरती पर जो रह रहे,
उनकी कही सुनो।।

*

हेराफेरी के बिना,
नेतागीरी न होए।
बिना शराफ़त जिस तरह,
नहीं शरीफ़ है कोए।।

*

नेताओ तुम देश का,
संकट कहाँ हरो।
हर संकट को बढ़ा के,
गहरा ओर करो।।

*

जर्रा–जर्रा देश का,
हर दिन करे पुकार।
नेताओं की नीति के,
हुए है सब शिकार।।

*

''कैलकुलेटर'' पर करें,
नेता लोग हिसाब।
सब अच्छा है देश का,
हालत नहीं खराब।।

*

बोल रहे हैं आँकडे,
कहती है तस्वीर।
दस प्रतिशत अमीर हैं,
बाकी सभी फकीर।।

*

नेताओं के भवन हैं,
जो छूएँ आकाश।
जनता को सिर ढाँपने,
की है अभी तलाश।।

*

नेताओं का लक्ष्य है,
बस पैसा या ऐश।
नहर की भाँति आ रहा,
इनके घर में "कैश"।।

*

पता नहीं नेताओं को,
कब आयेगा होश।
खुद करते हैं गलतियाँ,
लोगों को दें दोष।।

*

बने हो कुछ तो वह करो,
लोग करें जो याद।
यह गद्दी तो नहीं किसी की,
जद्दी जायदाद।।

*

भारत की रुह तड़पती,
ऊँची करे आवाज़।
"रहम करो नेता गणो,
बदलो कुछ अन्दाज़"।।

*

निर्वाचन आयोग ने,
दिया है ये आदेश।
अपराधी अब टिकट से,
दूर ही रहें हमेश।।

*

निरपराध यहाँ कौन है,
मुजरिम सभी को जान।
संसद में घुस जायेंगे,
फिर भी बद उनवान।।

*

दीवाने से फिर रहे,
आज हैं नेता लोग।
छूटी कुर्सी फिर मिले,
तभी हरेगा रोग।।

*

भाषण सुना तो यूं लगा,
स्वर्ग बनेगा देश।
निर्वाचन के बाद पर,
पड़ेगा वही क्लेश।।

*

बने हैं नेता देवता,
(जब) कुर्सी छूट गई।
अब जो टिकट भी न मिली,
(तो) किस्मत फूट गई।।

*

बातों में बहलायेगें,
नेता सब का चीत।
कुर्सी मिली तो फिर नहीं,
बने किसी के मीत।।

*

हाथ जोड़ लो फिर रहे,
नेता डोर टू–डोर।
नारे घड़ते नित नए,
फिरें मचाते शोर।।

*

नेताओं को लग गई,
लालच–लोभ की आग।
सूंघ गया है सभी को,
खुदगर्ज़ी का नाग।।

*

किसी के ये मित्र नहीं,
दुश्मन सभी के जान।
इन्हीं के इस किरदार से,
होती है पहचान।।

*

लोगों की यूँ अकल को,
ताले लगे हजार।
करते इन्हें बेकार जो,
उनको देवें कार।।

*

नेता किस उपलक्ष्य में,
आए हैं इस गाँव।
कहो—कि नेता नाम को,
किया हैं क्यों बदनाम।।

*

नोटों में अब तुलेंगें,
नेता बीच चुनाव।
एक तिजोरी भरेगी,
दूजे सुप्रभाव।।

*

कहनी–करनी में हुआ,
अन्तर कोस हज़ार।
ये अन्तर न मिट सका,
लोग हुए बेज़ार।।

*

मतदाताओ, बख्श दो,
मेरे सभी कसूर।
खड़ा हूँ झोली पसार कर,
वोटें दो भरपूर।।

*

वर्षा ऋतु में जिस तरह,
आते हैं सैलाब।
वैसे ही नेता फिरें,
देश में बिना हिसाब।।

*

दांव–पेच लगा रहे,
कुर्सी होए बहाल।
वोट की माला फेरने में,
वो करें कमाल।।

*

किसी को धमकी दे रहे,
किसी के लागे पाँव।
एक लक्ष्य नेताओं का,
राज–छतर की छाँव।।

*

भाषण सुनो लुभावने,
सोइये लंबी तान।
नेताओं की जान को,
रोइये झीनी बान।।

*

सत्तर साल की उम्र में,
मत का हीन कहाए।
सियासत के बलिहारने,
तख्त पे उसे बिठाए।।

*

अस्सी साल का मंत्री,
नब्बे के प्रधान।
इस मुर्दे में कौन है,
नई जो डाले जान।।

*

लोगों को मालूम है,
नेता धोखेबाज।
जाल में फिर भी फंसते,
वोटर बे अंदाज़।।

*

नेता मतलब के लिए,
हरदम बोलें झूठ।
तभी तो सुख इस देश के,
दिन–दिन रहे हैं टूट।।

*

भ्रष्ट हुए नेता गणो,
कुछ तो सोचो यार।
क्यों अपने आदर्श को,
बेचो बीच बाज़ार?

*

नोटों में अब तुलेंगें,
नेता बीच चुनाव।
एक तिजोरी भरेगी,
दूजे सुप्रभाव।।

*

कहनी–करनी में हुआ,
अन्तर कोस हज़ार।
ये अन्तर न मिट सका,
लोग हुए बेज़ार।।

*

मतदाताओ, बख्श दो,
मेरे सभी कसूर।
खड़ा हूँ झोली पसार कर,
वोंटें दो भरपूर।।

*

वर्षा ऋतु में जिस तरह,
आते हैं सैलाब।
वैसे ही नेता फिरें,
देश में बिना हिसाब।।

*

दांव–पेच लगा रहे,
कुर्सी होए बहाल।
वोट की माला फेरने में,
वो करें कमाल।।

*

किसी को धमकी दे रहे,
किसी के लागे पाँव।
एक लक्ष्य नेताओं का,
राज–छतर की छाँव।।

*

भाषण सुनो लुभावने,
सोइये लंबी तान।
नेताओं की जान को,
रोइये झीनी बान।।

*

सत्तर साल की उम्र में,
मत का हीन कहाए।
सियासत के बलिहारने,
तख्त पे उसे बिठाए।।

*

अस्सी साल का मंत्री,
नब्बे के प्रधान।
इस मुर्दे में कौन है,
नई जो डाले जान।।

*

लोगों को मालूम है,
नेता धोखेबाज।
जाल में फिर भी फंसते,
वोटर बे अंदाज़।।

*

नेता मतलब के लिए,
हरदम बोलें झूठ।
तभी तो सुख इस देश के,
दिन–दिन रहे हैं टूट।।

*

भ्रष्ट हुए नेता गणो,
कुछ तो सोचो यार।
क्यों अपने आदर्श को,
बेचो बीच बाज़ार?

*

मुरग–लड़ाई लड़ रहे,
हुए हैं लहू–लुहान।
इनके बाप का क्या गया,
उजड़ा हिन्दुस्तान।।

*

दीप जलाते ही गया,
सब अंधियारा दूर।
नेता ऐसा दीप है,
निगलें जग का नूर।।

*

धोती, टोपी पहन कर,
नेता बने जनाब।
नैतिकता का कर दिया,
खाना आज खराब।।

*

नेता नाम से आजकल,
नफरत करे हरेक।
क्योंकि धोखा धड़ी पर,
लगी है इनकी टेक।।

*

गठजोड़ों का दौर है,
गुटबंदी है आम।
भाग–दौड़ कर देखिये,
क्या होगा अंज़ाम।

*

जाल पुराने गाँठ कर,
नेता हुए तैयार।
कैसे कौन है फंसता,
बैठे करें हिसाब।।

*

नेता जी की हो गई,
उम्र अठासी साल।
नहीं सियासत छोड़ते,
कितने हुए निढाल।।

*

बूढ़े हुए तो क्या हुआ,
दिल है अभी जवान।
रहते दम नहीं छोड़ते,
सियासत, सियासत–दान।।

*

हाथ–पैर और सर हिले,
जैसे पीपल–पात।
टिकट की फिर भी कर रहे,
टेलीफोन पे बात।।

*

सभी सिद्धांत असूल ही,
हुए हैं आज बेकार।
लक्ष्य है वोट बटोरना,
करे जो बेड़ा पार।।

*

नैतिकता–इन्सानियत,
सब कुछ छोड़ दिया।
नेताओं ने शर्म से,
नाता तोड़ दिया।।

*

भगवन मिले या न मिले,
नहीं जरूरत कोए।
कुर्सी मिलनी चाहिए,
तभी तृप्ति होए।।

*

करनी नेता गणों की,
राष्ट्र है बदनाम।
जब से ये कुछ बने हैं,
किया नेक न काम।।

*

हरदम हरपल ही रहा,
केवल वोट का जाप।
कुर्सी का ही दिवस–रात,
रहे हैं राग अलाप।।

*

लिखा है एक पैगाम ये,
नेताओं के नाम।
इतने दोहों को भरो,
मैने ये कुछ जाम।।

*

नेतागण औलाद को,
देते हैं व्याख्यान।
कुर्सी कभी न छोड़िये,
जब लग घट में प्रान।।

*

लोक–राज में नहीं है,
लोक–लाज का नाम।
शोषण करते देश का,
खाते माल हराम।।

*

महंगाई ने कर दिया,
सारा चौपट खेल।
लोगों की आशाओं की,
जड़ों में डाला तेल।।

*

सूखा पड़े या बाढ़ हो,
कोई भी हो प्रकोप।
नेता भरें तिजौरियां,
करें कर्तव्य अलोप।।

*

भारत निर्धन नहीं था,
आदि से था धनवान।
नेतागणों ने कर दिया,
इसको धूल समान।।

*

ठग्गी, चोरी, तस्करी,
खुद नेता करवाएं।
उनसे हिस्सा बांटकर,
आप धनी बन जाएं।।

*

भारत में किस चीज की,
कमी है यारो आज।
नेताओं की नीयत ने,
किया है इसे मोहताज।।

*

मानवता के नाम पर,
नेता हैं इक दाग़।
भारत सुन्दर बाग की,
शाख़ पे बैठे काग।

*

नेताओं ने कर दिया,
सारा भ्रष्ट समाज।
इस लिये तो देश का,
बिगड़ा सारा काज।।

*

नेतागण खुदगर्ज़ हैं,
फर्ज़ गए हैं भूल।
गधे आवारा की तरह,
फिरें उड़ाते धूल।।

*

पतन वतन का हो रहा,
चिन्ता करता कौन।
नेता माया ऐंठ कर,
बन बैठे "फरऔन"।।

*

शासन अनुशासन बिना,
हो जाता है खीन।
नेता भारतवर्ष के,
हैं अनुशासनहीन।।

*

कुत्ते नेतागणों के,
बिस्कुट बरफी खाएं।
बच्चे कितने देश के,
भूखे ही सो जाएं।।

*

कैसे उन्नति हो सके,
कैस हो उत्थान।
देश के नेतागणों का,
खत्म हुआ ईमान।।

*

राजाओं के राज में,
शासक होता एक।
ईंट उठाओ मिलेंगे
शासक आज अनेक।।

*

नेतागण जालम बन गए,
जनता है मज़लूम।
कब छोड़ेंगे देश को,
नहीं है ये मालूम।।

*

स्वतन्त्रता के लिये,
किये न्यौछावर प्रान।
उनकी याद भुलाए कै,
नेता बने महान्।।

*

देश की मिट्टी समझते थे,
वो रत्न समान।
उस मिट्टी की लाज को,
रखा देकर प्रान।।

*

आज के नेतागणों ने,
बेच के खाया देश।
लूट के माल पे लड़ रहे,
घर-घर पड़ा कलेश।।

*

चांदी भाव से बिक रहे,
आलू, नमक, प्याज।।
नेता भाषण दे रहे,
ढूंढ रहे हैं "काज़"।।

*

नेताओं ने बदल दी,
भारतीयों की सोच।
ताकतवर कमज़ोर को,
रहा है पकड़ दबोच।।

*

हमदर्दी के नाम की,
रही न कोई चीज़।
नेताओं ने कर दिया,
वातावरण ग़लीज़।।

*

धन–दौलत के नशे में,
नेता हैं मदहोश।
मुँह में उंगली दाबकर,
खड़े हैं लोग ख़ामोश।।

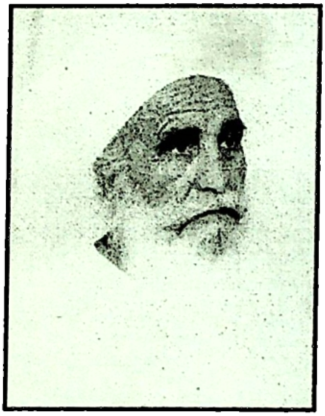
*

सुख–समृद्धि जगत की,
ले बैठे हैं आप।
जनता देखो झेलती,
सारे दु:ख संताप।।

*

वोट मांगने चले है,
नेता जोड़े हाथ।
लोग मज़ाकन पूछते,
"कैसे आये नाथ"?

"जो कुछ लिखा है, सत्य है,
तिल भर नहीं है झूठ।
नेताओं ने देश में,
खूब मचाई लूट।।"



लेखक :—
मा. अमरीक सिंह
अमृतसर कलां
जिला सिरसा (हरियाणा)